U.S. Information Service
1959-141
A. LINCOLN - Man of the People
Hindi - 50,000- for USIS-India

लोक-मानव

अब्राहम लिंकन

INDIAN-HINDI

1959-141

U.S.Information Service

A. Lincoln-Man of the People

LINCOLN NATIONAL
LIFE FOUNDATION

लिंकन का जन्म प्रारम्भिक आगन्तुकों के एक परिवार में हुआ

जब १२ फ़रवरी १८०९ को केंटकी में लकड़ी की एक कुटिया मे अब्राहम लिंकन ने जन्म लिया, उन दिनों अमेरिका एक नया और प्रसार-शील देश था। प्रारम्भिक आगन्तुक नयी बस्तियाँ बसाते और राष्ट्र का निर्माण करते हुए, भूमि और अवसर की खोज में निरन्तर पश्चिम की ओर बढ़ते जा रहे थे। इन्हीं प्रारम्भिक आगन्तुकों में टॉमस लिंकन भी एक थे जो नये सीमान्त के साथ-साथ अपने बढ़ते हुए परिवार को लेकर केंटकी की पहाड़ियों से पहले इंडियाना और फिर इलिनौय जा बसे। प्रदेश जंगली और सुनसान था, बन-पशु बहुत थे और खेती के लिए अछूते जंगल काट कर भूमि साफ करनी पड़ती थी।

अब्राहम लिंकन की माता को, जिनका जन्म का नाम नैंसी हेंक्स था, बहुत परिश्रम करना पड़ता था। उनका स्वास्थ्य भी बहुत अच्छा न था। पुत्र की आयु जब ९ वर्ष की ही थी तब स्नेहशील और आध्या-त्मिक वृत्ति की इस महिला की मृत्यु हो गयी।

बालक लिंकन को खेतिहर जीवन के लिए तैयार किया गया। उनका बहुत समय जंगल काटने, भूमि जोतने, मकई बोने और बाड़ के लिए लकड़ी चीरने में बीतता। क्रमशः उनका बदन छरहरा और लम्बा होता गया और भुजाएं तथा कन्धे बलिष्ठ हो गये।

उनकी पढ़ाई बहुत कम हुई—कुल मिला कर एक वर्ष से भी कुछ कम। पर उन्हें ज्ञान की लगन थी, इस लिए दिन भर के परिश्रम के बाद रात को वह पढ़ने-लिखने बैठ जाते। अंकगणित सीखने के लिए वह लकड़ी के एक तख्ते पर अभ्यास करते, भर जाने पर तख्ते को रन्दे से साफ कर देते। किताबें वह पड़ोसियों से उधार लेते। एक बार उन्होंने एक मित्र को बताया था—'पचास मील के घेरे में जहां भी किसी पुस्तक की सूचना मुझे मिली वह मैंने पढ़ डाली थी। उनके पिता और विमाता ने उनकी ज्ञान-पिपासा को प्रोत्साहन दिया।

लिंकन की बाल्यावस्था सीमान्त के पास बीती

उन्नीस वर्ष की आयु में किशोर सीमान्तवासी का ध्यान बाहर की दुनियां की ओर गया। माल लादने की एक नाव लेकर वह मिसिसिपी नदी से १८०० मील दूर न्यु ऑर्लियन्स तक गये। फिर इलिनौय लौट कर वह खेती-बाड़ी छोड़कर न्यू सलेम के कस्बे में जा बसे। वहाँ जीविका के लिए वह सर्वेक्षण और दुकान की देखभाल जैसे छोटे मोटे काम करते रहे, और साथ-साथ कानून भी पढ़ते रहे। दुकान के एक साझीदार के दिवालिया हो जाने पर लिंकन ने सारे भारी कर्ज़े का बोझ अपने ऊपर ले लिया और अन्त में १५ वर्षों में चुका दिया।

वह बड़े लोकप्रिय थे। कस्बे में जब विरोधी इंडियनों से लड़ने के लिये स्थानीय लोक-रक्षक सेना बनी तो वह उसके नेता चुने गये। वह किस्से कहानियां सुनाने में और सार्वजनिक वाद-विवाद में बड़े कुशल थे। मित्रों ने उनसे चुनाव में खड़े होने का आग्रह किया।

उन्होंने समाज में अपना मार्ग आप बनाना सीखा

वह राज्य के शासन में जनता के निर्वाचित नेता के रूप में सामने आये

तेईस वर्ष की आयु में वह राज्य विधान-सभा के लिए खड़े हुए, किन्तु हार गये। सन् १८३४ के अगले चुनाव में वह फिर खड़े हुए और इस बार जीत गये। जब वह राज्य की राजधानी में आये तब वह इतने गरीब थे कि उन्हें अपने दो बोरी सामान के लिए एक घोड़ा मंगनी लेना पड़ा। और शहर में उन्होंने एक परिचित के यहां आश्रय लिया। अनन्तर हालत सुधरने पर उन्होंने मेरी टॉड से विवाह किया। उनके चार सन्तानें हुईं; किन्तु उनमें से एक ही लड़का जीवित रहा।

विधान सभा के कार्य से उनकी शक्ति और ज्ञान बढ़ते रहे, और उन्होंने भाषण और लेखन पर पूरा अधिकार पाया। वह सभा-भवन में अपने दल के, जिसका वहां अल्प मत था, नेता चुने गये। अनुभव ने उनके इस विश्वास को पुष्ट किया कि जनता का सामूहिक विवेक ही प्रजातन्त्र का आधार होता है।

चार-बार चुने जाने के बाद लिंकन ने अपनी बढ़ती हुई वकालत के कारण विधान-सभा छोड़ दी। वकालत में उन्होंने असाधारण स्मरण-शक्ति, एकाग्रता और किसी भी प्रश्न की जड़ तक पहुंचने की क्षमता दिखायी, और उनकी समझदारी, सहानुभूति और ईमानदारी की बड़ी ख्याति हो गयी।

समकालीन घटनाओं में उनकी सक्रिय रुचि बनी रही, और व्याख्यानों के लिए उनकी बराबर माँग होती रहती। विचारों की स्पष्टता, दो टूक बातों और देहाती चुटकुलों के कारण उनके बहुत से अनुयायी हो गये। उन दिनों जज और वकील अभियोगों की सुनवाई के लिए घोड़ों पर नगर-नगर दौरा करते थे। इन्हीं दौरों पर लिंकन को कानून और इन्साफ़ के बारे में मनन और चिन्तन का अवसर मिलता रहा, और उन्होंने एक राजनीति-दर्शन पाया जिसका दूर व्यापी प्रभाव पडा।

देहाती वकील के रूप में उन्हें चिन्तन का अवकाश मिला

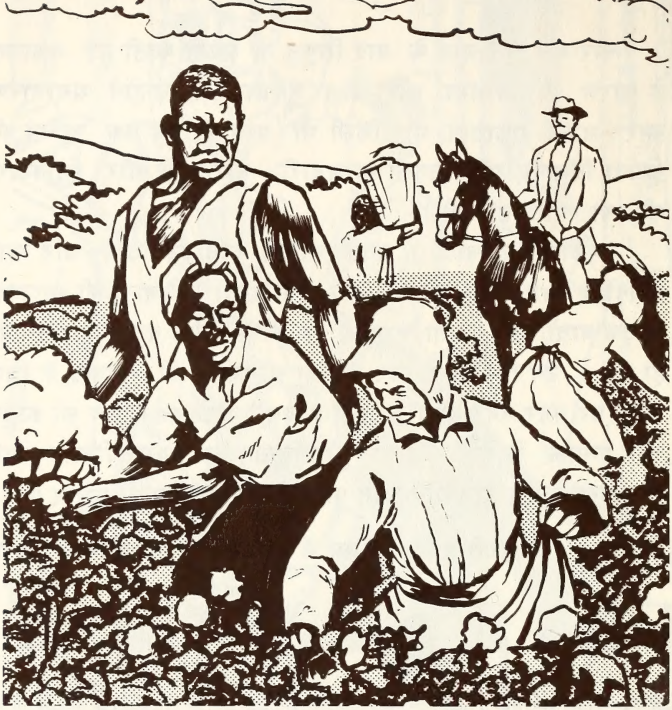

दास-प्रथा के अधीन मनुष्यों को निजी सम्पत्ति समझा जाता था

जिन प्रश्नों पर उन्होंने विचार किया, उनमें से एक दास-प्रथा थी। सौ वर्ष पहले के अमेरिका में आधे हिस्से में सब लोग स्वतन्त्र थे, पर आधे में दास-प्रथा प्रचलित थी। अफ्रीका के बहुत से नीग्रो, यूरोप के दास-विक्रेताओं द्वारा उपनिवेशों में लाये गये थे; दक्षिणी राज्यों की कृषि-प्रधान अर्थ-व्यवस्था इन्हीं की सस्ती मज़दूरी पर निर्भर थीं।

किन्तु दास-प्रथा ने एक जटिल प्रश्न खड़ा कर दिया था। एक ओर वह स्वाधीनता की घोषणा और संविधान की मूल भावना के प्रतिकूल थी, दूसरी ओर दक्षिणी राज्यों के जमींदार यह मानते थे कि उनके दास उनकी न्यायतः पायी हुई सम्पत्ति हैं। लिकन बहुत समय तक गम्भीर चिन्तन करके इस परिणाम पर पहुँचे कि "अगर दासता अनुचित नहीं है तो कुछ भी अनुचित नहीं है।" विकासशील देश के नये प्रदेशों में दास-प्रथा के फैलने का विरोध करने के आन्दोलन में वह भी सम्मिलित हो गये।

लिंकन को वाशिंगटन में पहला अनुभव संसद के सदस्य के रूप में मिला

जब यह जान पड़ने लगा कि नये घटना-चक्र से नये पश्चिमी प्रदेशों में भी दास-प्रथा की जड़ें जमने में मदद मिल रही है, तब लिंकन को फिर राजनीति में प्रवेश करने की प्रेरणा हुई। वह अमेरिका की संसद (कांग्रेस) के लिए खड़े हुए और निर्वाचित हो गये। संसद-सदस्य होकर उन्होंने यह प्रस्ताव रखा कि कोलम्बिया डिस्ट्रिक्ट में दास-प्रथा का अन्त किया जाय। यह प्रस्ताव तो गिर गया, पर कुछ वर्षों बाद इसी आशय का कानून बन गया।

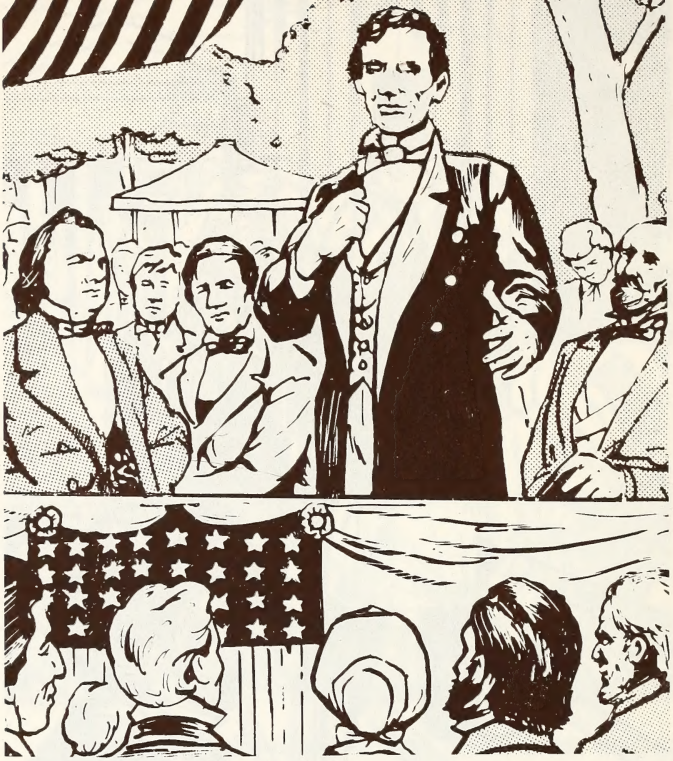

राजनीतिक मंच पर उन्होंने अपने विचार कसौटी पर रख दिये। उनका नारा था : 'समान अधिकार और स्वतन्त्र प्रदेश'

संसद् में एक कार्य-काल पूरा कर के लिंकन फिर वकालत करने लगे। अनन्तर उन्होंने एक नया राजनीतिक दल स्थापित किया जो 'रिपब्लिकन पार्टी' कहलाया। सन् १८५८ में वह इस दल की ओर से इलिनौय से सेनेट के लिए उम्मीदवार हुए। दूसरे मुख्य राजनीतिक दल 'डेमोक्रैटिक पार्टी' ने स्टीवन ए० डगलस को खड़ा किया। इलिनौय में विभिन्न स्थानों पर दोनों में जो सात सार्वजनिक विवाद हुए, उन से दास-प्रथा की गम्भीर राजनीतिक समस्या जनता के मन पर गहरी अंकित हो गयी।

जिन नगरों में विवाद हुए, उनके आस-पास के प्रदेशों और राज्यों से जनता उमड़ आयी

डगलस का तर्क था कि नये प्रदेशों के लोगों को यह निर्णय करने का अधिकार होना चाहिए कि वे दास रखेंगे या नहीं। लिंकन का जवाब था कि किसी मनुष्य को दूसरे मनुष्य का स्वामी होने का अधिकार नहीं है; दास-प्रथा अनुचित है और उस का प्रसार करने के बजाय क्रमशः उस का अन्त करना चाहिए। दक्षिण के दास-स्वामियों से सहानुभूति रखते हुए भी उनका कहना था कि कोई ऐसा उपाय निकालना चाहिए जिससे उनकी "सम्पत्ति" की क्षतिपूर्ति की जा सके।

इन विवादों ने राष्ट्र की आत्मा को कचोट दिया और अब्राहम लिंकन का गौरव बढ़ा दिया। आन्दोलन के अन्त में जब वोट लिये गये तब डगलस थोड़े से वोटों से जीत गये। पर लिंकन को शीघ्र ही इससे भी बड़ा सम्मान मिलने वाला था--संयुक्तराज्य अमेरिका के सोलहवें राष्ट्रपति चुने जाने का।

४ मार्च, १८६१ को अब्राहम लिंकन राष्ट्र के सोलहवें प्रैज़िडेंट के पद से अपना सभारम्भ भाषण देने के लिए घोड़े पर सवार होकर अधूरे बने संसद्-भवन (कैपिटोल) तक गये। आगे आने वाले कठिन समय में संयुक्तराज्य अमेरिका का मार्ग निर्देशन करने के लिए यह चुनाव वह अपने पुराने प्रतिद्वन्द्वी डगलस के विरुद्ध जीते थे।

दास-प्रथा के प्रश्न को ले कर देश में कटुता फैल गयी थी। उग्रपन्थी शोर मचा रहे थे, भावनाएँ विवेक पर हावी हो गयी थीं। उत्तर और दक्षिण की आशंकित फूट सामने आ गयी थी। सात दक्षिणी राज्यों ने संघ से अलग होकर 'अमेरिकी सम्मिलित राज्य' (कानफ़ेडेरेट स्टेट्स ऑव अमेरिका) स्थापित किया। शीघ्र ही चार और राज्य उनसे मिल गये। लिंकन ने उनसे फिर विचार करने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा––"गृह-युद्ध के महत्त्वपूर्ण प्रश्न का निर्णय मेरे नहीं, आपके हाथों में है।"

राष्ट्र के प्रेजिडेंट चुने जाकर उन्हें एक अवांछित युद्ध के सकट का सामना करना पड़ा

कटु संघर्ष में वह निरन्तर नैतिक मार्ग-दर्शन करते रहे

किन्तु युद्ध होकर रहा। चार वर्ष के कटु संघर्ष में राष्ट्र के नेतृत्व का भार मानवता-प्रेमी लिंकन पर पड़ा।

आरम्भ में उत्तर के साधन अधिक होने पर भी दूरदर्शी सैनिक निर्देशन की कमी के कारण उसकी कई बार हार हुई। उत्तरी सेनाओं ने सम्मिलित राज्यों के एक पश्चिमी भाग को घेर लिया, पर दक्षिणी सेना बड़ी संख्या में उत्तर के प्रदेश में घुस आई।

वाशिंगटन में प्रैजिडैंट को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था। उन्हें एक विजयी सेनापति की खोज करनी थी, उत्तर के दृष्टिकोण को राजनीतिक संघर्ष का रूप ले लेने से बचाना था, दक्षिण से बदला लेने की भावना को रोकना था, और प्रजातन्त्री शासन के सिद्धान्तों की रक्षा करनी थी।

लिंकन का पहला महान् उद्देश्य था संघ की रक्षा करना। दूसरा उद्देश्य भी सन् १८६२ तक उनके सम्मुख स्पष्ट हो गया था और यह था दासों को मुक्त करना। स्वभावतया वह दासों को धीरे-धीरे मुक्त करना चाहते, पर दक्षिण इसके लिए तैयार नहीं था।

इस लिए १ जनवरी, १८६३ को लिंकन ने दास-मुक्ति की घोषणा पर, जो कि अमेरिकी इतिहास का एक गौरवपूर्ण दस्तावेज़ है, हस्ताक्षर कर दिये। इस घोषणा के द्वारा दक्षिण के दासों को मुक्ति दे दी गयी और युद्ध को एक ऐसा नया नैतिक लक्ष्य मिल गया जिसे मानव-मात्र की स्वातन्त्र्य-यात्रा की एक नयी मज़िल कहा जा सकता है। अनन्तर संविधान का संशोधन करके संयुक्तराज्य अमेरिका के किसी भी भाग में दासता का सदा के लिए निषेध कर दिया गया। लिंकन ने आशा प्रकट की कि दास-स्वामियों को क्षतिपूर्ति के रूप में कुछ मिलेगा।

युद्ध के मध्य में—दास-मुक्ति की घोषणा

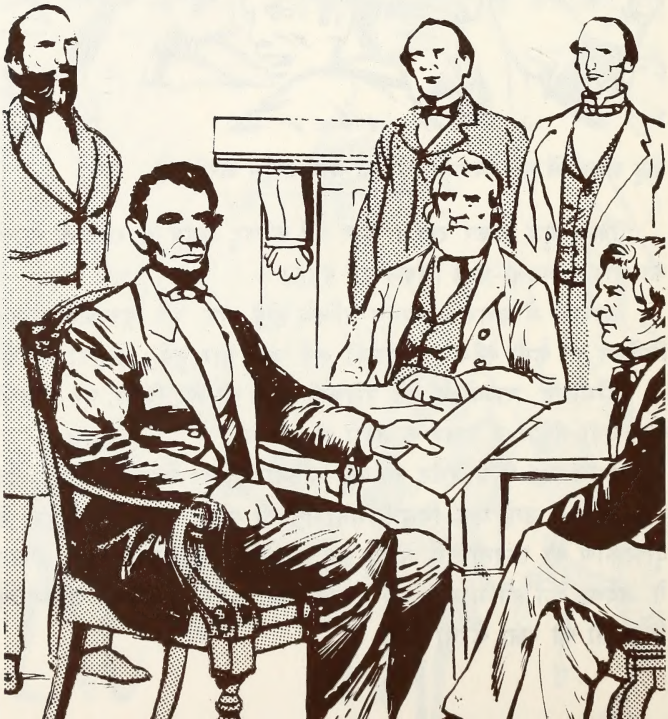

युद्ध का पासा पलट रहा था। संघ द्वारा की गई समुद्री नाकाबन्दी के कारण दक्षिण का व्यापार बन्द हो गया था। उधर स्थल पर संघ-सेनाओं ने पश्चिम से आक्रमण कर के सागर-तट की ओर बढ़ते हुए 'सम्मिलित राज्य' को दो हिस्सों में बाँट दिया और फिर उत्तर को मुड़ीं कि दक्षिणी सेनाओं को घेरे में ले लें।

लिकन हताहत सैनिकों की बढ़ती हुई सूची देखकर दुखी होते थे, किन्तु दुख के मध्य में भी उन्हें प्रेरणा मिली और उन्होंने जो शब्द व्यक्त किये वे सभी राष्ट्रों के लिए प्रजातन्त्र के आदर्श की परिभाषा बन गये हैं। सन् १८६३ की शरद ऋतु में उन्होंने गेटिसबर्ग (पेनसिलवानिया) में घोषित किया कि—"ईश्वर की छत्रछाया में यह राष्ट्र एक नये स्वातन्त्र्य को जन्म देगा और...जनता के द्वारा, जनता के हित में, जनता का शासन पृथ्वी पर से कभी नहीं मिटेगा।'

दुख के मध्य में—प्रजातन्त्र का आदर्श

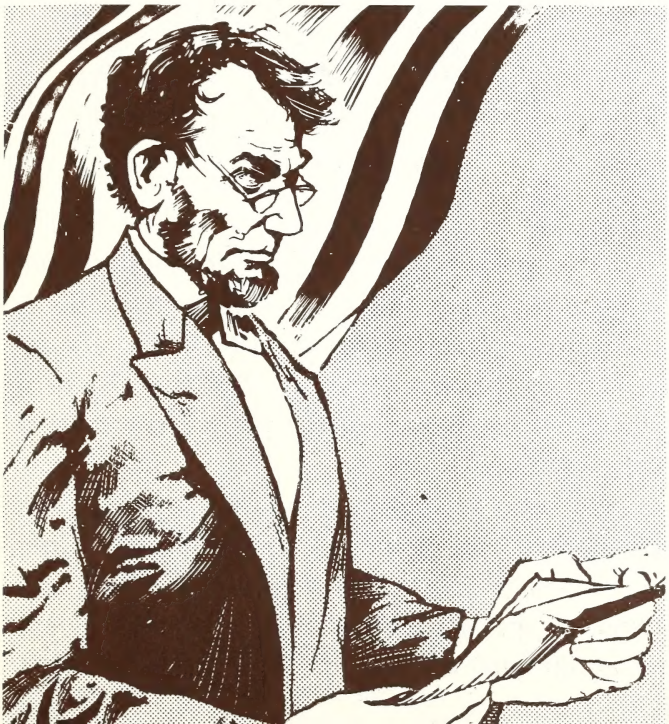

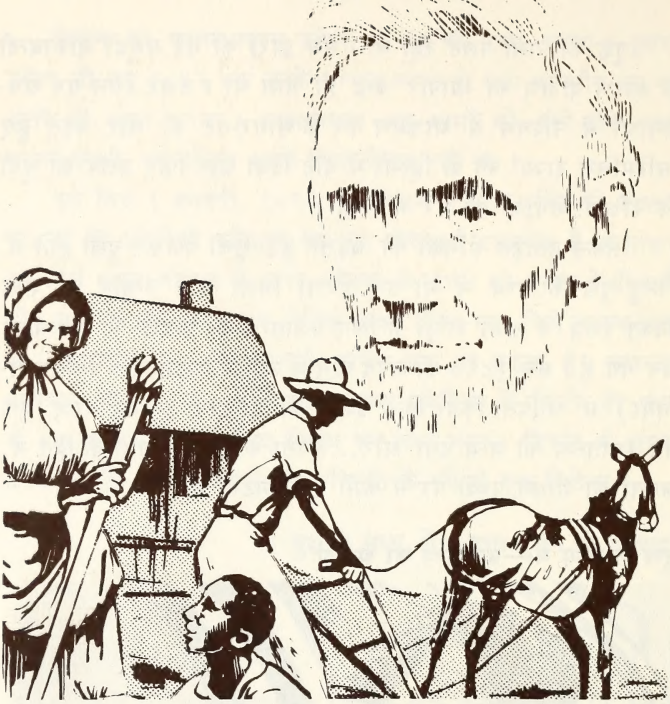

अन्त में शान्ति और पुनर्निर्माण का युग आया

अन्त में सन् १८६५ में युद्ध-पीड़ित देश को शान्ति प्राप्त हुई; राष्ट्र फिर एक हो गया। राष्ट्रपति ने पहले से ही पुनर्निर्माण की ऐसी उदार योजना बना रखी थी जिस से पुनः संयुक्त होने वाले राज्यों को तत्काल स्वशासन का अधिकार मिल जाये, संघ के प्रति भक्ति की शपथ लेने वालों को क्षमा कर दिया जाये, नीग्रो जनता को बसने में सहायता दी जाये और दक्षिण को आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी होने में मदद की जाये।

लिंकन ने अपना नीति-दर्शन अपने दूसरे सभारम्भ भाषण में प्रकट किया—"किसी के प्रति द्वेष-भाव न रखते हुए और सभी के प्रति उदारता का व्यवहार करते हुए हम प्रयत्न करें कि राष्ट्र के घावों की मरहम-पट्टी हो, हम अपने देश में और दूसरे सब देशों के साथ न्यायोचित और स्थायी शान्ति पाने और बनाये रखने के लिए भरसक काम करें।"...

किन्तु लिंकन अपने स्वप्न को अपने जीवन में घटित होते न देख सके। राष्ट्रपति-पद का दूसरा कार्य काल आरम्भ होने के केवल एक मास बाद, युद्ध की समाप्ति के केवल पाँच दिन बाद, एक मतान्ध दक्षिणी ने वाशिंगटन की एक रंगशाला में राष्ट्र-पताका से सजे हुए अपने स्थान पर बैठे हुए उनकी हत्या कर दी।

सभी आँखें रंग-मंच की ओर लगी थीं कि सहसा एक गोली की आवाज़ गूँज गयी। राष्ट्रपति अपनी कुर्सी में ही आगे को लुढ़क गये। हत्यारा भागा, पर गिरफ्तारी का विरोध करते मारा गया। लिंकन को रंगशाला के सामने एक मकान में ले जाया गया जहाँ वह रात भर निश्चल पड़े रहे और सारा राष्ट्र चिन्ता में डूबा रहा। बिना चेतना लाभ किये हुए दूसरे दिन सबेरे उनकी मृत्यु हो गयी। मन्त्रिमण्डल के एक सदस्य ने कहा,—'अब वह युगों-युगों की निधि हो गये'...

'अब वह युगों-युगों की निधि हो गये।'

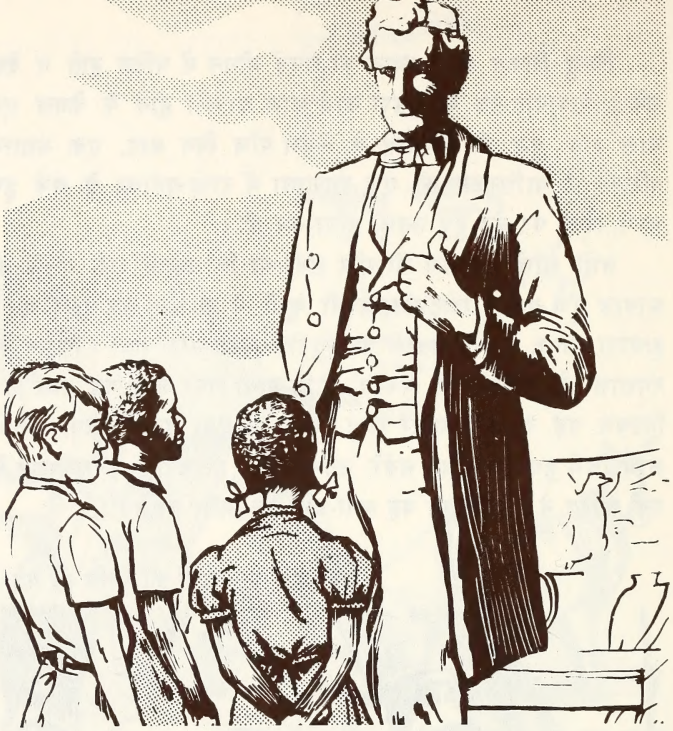

अब्राहम लिंकन—लोक मानव

किसी ने लिखा है कि "लिंकन साधारण जन का बृहत रूप था।" यह लोक-मानव मनुष्य की समस्याओं को समझता था और उसके कष्ट से सहानुभूति रखता था। लिंकन के हृदय में यह विश्वास बहुत गहरा जमा हुआ था कि ईश्वर की दृष्टि में सभी मनुष्य समान हैं और सब को अपना भाग्य गढ़ने का समान अवसर मिलना चाहिए।

सहन-शीलता में उनकी श्रद्धा, प्रजातन्त्र की विधियों में उनका विश्वास, न्याय के लिए लड़ने की उनकी तत्परता, पीढ़ियों से अमेरिकी जनता को प्रेरणा देती रही है। मानव-मात्र की मूलभूत शिवता में उनकी आस्था अमेरिकी आदर्श की बुनियाद है। लिंकन की गाथा पर दृष्टिपात करना मानो हाथ बढ़ा कर एक राष्ट्र की आत्मा का स्पर्श पा लेना है।

71.2009.084.10630

अमरीकी सूचना विभाग द्वारा वितरित

9-8925